दैनिक हरिभूमि, भोपाल

4 FEB 2017

मुख्यमंत्री के ब्लॉग से

गौरवशाली है मां नर्मदा का इतिहास

नर्मदा जयंती के अवसर पर सभी प्रदेशवासियों को हार्दिक बधाई। आज हनुवंतिया में मां नर्मदा की पूजा-अर्चना एवं आरती करने के बाद कैबिनेट की बैठक में मध्यप्रदेश के विकास की योजनाओं के संबंध में निर्णय लेकर आध्यात्मिक शांति की अनुभूति हुई है। विश्व की सभी प्राचीन सभ्यताएं नदियों के तट पर ही विकसित हुई हैं। नर्मदा घाटी भी इसका अपवाद नहीं है। नर्मदा घाटी का सांस्कृतिक इतिहास गौरवशाली रहा है। मां नर्मदा का आसपास की धरती को समृद्ध बनाने में बहुत योगदान रहा है। नर्मदा नदी को मध्यप्रदेश की जीवन-रेखा कहा जाता है। मां नर्मदा को भारतीय संस्कृति में मोक्षदायिनी, पाप मोचिनी, मुक्तिदात्री, पितृतारिणी और भक्तों की कामनाओं की पूर्ति करने वाले महातीर्थ का भी गौरव प्राप्त है।

नर्मदा की धारा में सामाजिक चेतना

नर्मदा नदी भारत की सात प्रमुख नदियों में से एक है। प्राचीन काल से ही नर्मदा की धारा में सामाजिक चेतना देखने को मिलती है। नर्मदांचल में अनेक पंथों के संतों का समय-समय पर आगमन हुआ। इनमें कबीर पंथ, सिख पंथ, तारण पंथ, राधावल्लभ पंथ और प्रणामी पंथ प्रमुख हैं। नर्मदा किनारे पर मैकल, व्यास, भृगु, अत्री और कपिल जैसे ऋषियों के तप करने का भी उल्लेख पुराणों में मिलता है। आदि शंकराचार्य ने भी इस भूमि पर तप किया। इन संतों ने अपनी वाणी और संदेश से नर्मदा क्षेत्र के धार्मिक वातावरण को उदार बनाया।

सेठानीघाट का ऐतिहासिक महत्व

होशंगाबाद के सेठानी घाट का ऐतिहासिक महत्व है। ब्रह्म विद्या सोसाइटी के संस्थापक हेनरी स्टल अलकाट ने यहां अपने अंतर्राष्ट्रीय सहयोगियों के साथ स्नान करके आध्यात्मिक आनंद प्राप्त किया था। इस घाट पर नर्मदा का जन्मोत्सव नर्मदा जयंती के रूप में वर्ष 1976 से मनाया जा रहा है। उस समय यह आयोजन नर्मदा में प्रदूषण के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए ही प्रारम्भ किया गया था, जो आगे चलकर सामूहिक पूजा में बदल गया। 'नमामि देवि नर्मदे- नर्मदा सेवा यात्रा' अभियान इतिहास की उसी परम्परा का पुनर्जीवन है, जो कि प्रदेश के नागरिकों को मां नर्मदा के ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और आर्थिक पहलुओं से परिचित कराएगी। इस यात्रा का उद्देश्य नर्मदा और विश्व की सभी नदियों को प्रदूषण मुक्त रखने के संदेश और नर्मदा तपोभूमि के सामाजिक समरसता के विचार को पूरे प्रदेश, देश और समूची दुनिया में पहुंचाना है।

अभियान बना जन आंदोलन

मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि आज 'नमामि देवि नर्मदे-नर्मदा सेवा यात्रा' अभियान एक जन आंदोलन बन गया है। सभी लोग बड़े उत्साह और उमंग के साथ दुनिया के सबसे बड़े नदी संरक्षण अभियान में बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं। आध्यात्मिक गुरु और नोबेल शांति पुरस्कार विजेता दलाई लामा, हमारे देश के महान अभिनेता अमिताभ बच्चन, जिन्हें हम स्वर कोकिला के नाम से जानते है, ऐसी लता मंगेशकर और नोबल शांति पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी के अलावा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इंरट तिमोर के नोबल शांति पुरस्कार विजेता जोस रामोस होर्ता और ट्यूनीशिया की नोबल शांति पुरस्कार विजेता श्रीमती वाहडेड बाउन्चेमोई जैसी हस्तियों का हमें समर्थन प्राप्त हुआ है। इससे हमारा मनोबल बढ़ा है।

नहीं मिलने देंगे दूषित जल नर्मदा में

मां नर्मदा भविष्य में प्रदूषित न हों इसलिए हमने फैसला लिया है कि 15 शहरों के दूषित जल को नर्मदा में नहीं मिलने देंगे! इसके लिए हम 1500 करोड़ रुपए की राशि से सीवरेज ट्रीटमेंट प्लान्ट लगा रहे हैं। नर्मदा नदी के तट के सभी गांवों और शहरों को खुले में शौच से मुक्त किया जाएगा। नर्मदा नदी के दोनों ओर बहने वाले 766 नालों के पानी को नर्मदा में जाने से रोकने के सुनियोजित प्रयास किए जाएंगे। नदी के दोनों ओर हम सघन वक्षारोपण करेंगे ताकि नर्मदा में जल की मात्रा बढ़ सके। नर्मदा के तट पर स्थित गांवों और शहरों में 5 किमी की दूरी तक शराब की दुकानें नहीं होंगी। सभी घाटों पर शवदाह गृह, स्नानागार और पूजा सामग्री विसर्जन कुण्ड बनाए जाएंगे ताकि मां नर्मदा को पूर्णतः प्रदूषण रहित रखा जा सके।

दुनिया की नदियों को बचाया जाए

मेरे विचार से हमें नदियों के महत्व को समझते हुए पूरी दुनिया में नदियों को बचाने के लिए लोगों को जागरूक करना चाहिए, जिन नदियों के किनारे हमारी प्राचीन सभ्यताएं विकसित हुई हैं, यदि वह नदियाँ ही स्वच्छ नहीं रहेंगी तो हमारी सभ्यता और संस्कृति के स्वस्थ रहने की कल्पना हम कैसे कर सकते हैं।

संयुक्त राष्ट्र में करूंगा अपील

मैं संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंटोनियो गुटेरस को पत्र लिखकर यह अनुरोध करूंगा कि वह पूरी दुनिया में संयुक्त राष्ट्र की अगुवाई में नदियों को संरक्षित और प्रदूषणमुक्त रखने के लिए लोगों को जागरूक करने अभियान चलाएं हम इसमें उनके साथ हैं। आइए संकल्प लें कि हम पूरे विश्व में नदियों को स्वच्छ बनाने के लिये लोगों का आह्वान कर एक सुखी, समृद्ध और सुन्दर विश्व का निर्माण करेंगे।

-शिवराज सिंह चौहान